elect, in such manner as the Chairman may direct, one Member from among the Members of the House to be a Member of the Central Silk Board.

The question was put and the motion was adopted.

THE VICE-CHAIRMAN: (SHRI V. NARAYANASAMY): Now, we shall take up the Zero Hour submissions.

RE: EXTINCTION OF KORKU POPULATION DUE TO MALNUTRITION AND LACK OF MEDICAL CARE

श्री शत्रुघ्न सिन्हा (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा के लिए आपका आभार प्रकट करते हुए सदन के कई वरिष्ठ एवं सांसदों और सरकार का ध्यान बहुत ही गंभीर, भयानक, दर्दनाक और शर्मनाक मामले की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं। अपनी कर्मभूमि महाराष्ट्र के अमरावती जिले के मालघाट में 1993 से लेकर 1996 के बीच 6 साल से कम उम्र के 3,821 बच्चों की मृत्यु हो चुकी है। यह कार्य, यह प्रक्रिया कांग्रेस के जमाने में शुरू हुई लेकिन आज भी बहुत जोर-शोर से चल रही है।

श्री एस0एस0 अहलुवालिया (बिहार) कांग्रेस बीच में कहां से अस गयी?...(व्यवधान)...

एक माननीय सदस्य : शिवसेना और बी0जे0पी0 की सरकार है।...(व्यवधान)...

श्री शत्रुघ्न सिन्हा : स्वयं कह रहा हूं कि यह शुरूआत कांग्रेस के जमाने से हुई थी लेकिन आज़ भी जोर-शोर से चल रही है और किसी भी सरकार की अहमियत मानव जीवन से ज्यादा नहीं हो सकती।

मैं कहना चाहता हूं कि 1993 से 926 बच्चों की मृत्यु हुई, 1994 से 894 बच्चों की मृत्यु हुई 1995 में फिर 926 बच्चों की मृत्यु हुई और 1996 में जिसका आपने जिक्र किया कि शिवसेना और भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, 1,075 बच्चों की मृत्यु हुई। एक हाई पावर कमेटी नर्लिक्षा और आर0सी0 सिन्हा की महाराष्ट्र सरकार ने बैठाई और उस कमेटी ने जो उसके कारण दिए, उन कारणों में हैं। Mal-nutrition, lack of medicare, bonded labour, lowest minimum wages in the State, Advasi Land Alienation, diminishing attitude towards Korkus community, unlawful management of Malgha reserved forest.

उपसभाध्यक्ष, महोदय, ये कोर्कू समाज के अत्यंत् पिछड़े, शोषित वर्ग के आदिवासी है। इनकी अआज जनसंख्या सिर्फ 21 हजार रह गई है, यह 21 हजार का समुदाय रह गया है। इनकी 1891 में, 1931 में या 1951 में जो जनसंख्या थी, आज उससे भी कम इनकी जनसंख्या रह गई है। भारत सरकार ने छह और जातियों को जिसमें बिहार की बिरोह जनजाति है उसके लिए भी घोषणा की है कि. "...indanger of extinction in free India" as per the data submitted by the Maharashtra Government to the Nagpur Bench of the High Court of Bombay in W.P. 2924/93 Recently, at least, 3,821 children under the age of six years died of malnutrition and medical neglect between 1993 to 1996. The heavy death toll which began under the Congress rule continued unabated even till date. The undermentioned figures bear testimony; in 1993, 96 child deaths; in the year 1994, 894 child deaths; in the year 1995 926 child deaths and in the year 1996, 1025 child deaths.

उपसभाध्यक्ष महोदय, यह आशंका है कि आने वाले कुछ महीनों में और बहुत सारे बच्चों की मृत्यु हो जायेगी। सरकार की इन हरकतों की वजह से, सरकार की कमेटी और कमेटी के ऊपर फिर कमेटी बैठाने की वजह से इन बच्चों की मृत्यु हो जायेगी। छह साल के ऊपर के कितने बच्चों की मृत्यु हुई है या बाई डिलीवरी कितनी औरतों की मृत्यु हुई हैं, इसके आंकड़े उपलब्ध नहीं है।

THE VICE-CHAIRMAN: (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Sinha, kindly be, brief.

SHRI SHATRUGHAN SINHA: The above data is also available with the Union of India and SC/ST Commission since 1994. Sir, thousands of children are facing the risk of death during the next few months. My question is how long are the Govemment of India's Departments of Child Labour, Tribal Welfare, Health and Forest going to ignore this continuing calamity and why is the Government of India not taking steps to correct the

Integrated Child Development Scheme (ICDS), release and rehabilitate the bonded labour, ensure reasonable minimum wages and evolve a forest programme that sustains indigenous people? We must scrap this ICDS programme and reconstruct a programme which gives child-specific, age-specific and need-specific health care. Thank you.

श्री संजय निरूपम (महाराष्ट्र) : सर, मैं अपने आपको इससे संबद्ध करता हूं।

श्री सुशील कुमार संभाजीराव शिन्दे (महाराष्ट्र) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं श्री शत्रुघ्न प्रसाद जी की जो जीरो आवर की मेडन स्पीच थी उसके लिए मैं उनका अभिनन्दन करता हूं। जो आये बिहार से और महाराष्ट्र की कर्मभूमि का, विशेषतत: आदिवासियों के प्रश्नों पर, उन्होंने सवाल उठाया। लेकिन थोड़ी सी गलती उनकी हो गई कि उन्होंने कहा कि कांग्रेस के राज में 1993 से लेकर आज तक गरीब आदिवासियों के बारे में कुछ नहीं हुआ है। यह बात सही है। चाहे कांग्रेस का राज को, चाहे बीजेपी का राज हो, सवाल उन बच्चों का है जिन पर दुर्लक्ष हहो गया है सम्पूर्ण समाज कका। ये ट्राइब्स के बच्चें हैं उनकी हालत माल न्यूट्रिशियन से बहुत खराब हो रही है। यह केवल एक मेलघा में ही नहीं है। एन्टायर विदर्भ रीजन और धुलियां जो जलगांव का भाग है वह उसमें आता है। इसलिए जो सुझाव उन्होंने रखा है...। भारत सरकार और महाराष्ट्र सरकार इन दोनों को मिलाकर एक विशेष प्रोग्राम बनाकर इन बच्चों को सशक्त सुविधाएं दी जायें ताकि वे सुदृढ़ और स्वस्थ बनें क्योंकि भारत सरकार और किसी भी सरकार का यह प्रथम कर्त्तव्य है कि उनको सुविधाएं दें और जो पिछड़े बहुत पिछड़े हैं उनको एक आदर्श नागरिक बनाने की नीति रखें। इसमें मैल न्यूट्रीशियन का सवाल है। मुझे पूरा विश्वास है कि भारत सरकार इनका पूरा ध्यान रखेगी।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Shrimati Jayanthi Natarajan, please.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu):' Mr. Vice-Chairman, Sir, I would like to draw the attention of the Government...

SHRI MD. SALIM (West Bengal): Before the next issue is taken up, I would like to say something on what Shri Shatrughan Sinha has said. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): We will record that the whole House is associating itself with this. We have got 12 Zero Hour submissions *(Interruptions)*

SHRI MD. SALIM: Have the lives of tribals, have the lives of these tribal children, no value? *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V NARAYANASAMY): We will have a special discussion. *(Interruptions)*

SHRI MD. SALIM: After fifty years of Independence, this is the status of the children in the county.

THE VICE-CHAIRMAN: (SHRI V. NARAYANASAMY): We can have a separate discussion on this *(Interruptions)*

SHRI MD. SALIM: it is very unfortunate. *(Interruptions)*

श्री मोहम्मद सलीम : अभी श्री शत्रुघ्न सिन्हा ने जो मुद्दा यहां उठाया है श्री शिन्दे जी ने उसका समर्थन किया है। आज सवाल यह नहीं है कि कांग्रेस की राय है, जनता दल की राय है, बीजेपी की राय है, सवाल यह है कि जो ट्राईबिल बच्चे मारे जाते है उनको तो मालूम भी नहीं होता है कि पार्टी का कौन सा सिम्बल होता है। आज हमारी आजादी के पचास साल हो गये हैं इन पचास सालों में और पचास साल पहले या सौ साल पहले जिन लोगों ने इस देश की आजादी के लिए, मुल्क के लिए खून बहाया था वे आदिवासी लोग ही थे। आज उनके बच्चों को खाना भी उपलब्ध नहीं है जिसकी वजह से वे मारे जा रहे हैं। उनके पास न तो कोई साधन है जो पहले उनके पास जमीने, ज्रगल आदि थे वे उनसे छीन लिये गए हैं। आजादी के पचास सालों से उवे अपने अधिकार के लिए लड़ रहे थे। इस सदन में केवल चर्चा करने से समस्या हल नहीं होगी। हमारी सरकार ने कहा था कि दिल्ली में इतनी गाडिया है,ये गाड़िया कहां से आई? जाकर सरकार से पूछिये तो वह कहती है कि हमने इतने प्रोजेक्ट्स सैंक्शन किये, इतनी स्कीमें सैंक्शन की। वह रूपया, यहां कैपिटल दिल्ली में गाड़ियों में तबदीली हो जाता है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Salim, you are only associating.

श्री मोहम्मद सलीम : आज चाहे आदिवासी धुलिया में हों, उनको खाना नहीं मिल रहा है। बस्तर जिले में हों, उनको खाना नहीं मिल रहा है। सवाल यह है कि इस सदन से केवल सच का समर्थन होना चाहिये यहां किसी पार्टी का सवाल नहीं है। आदिवासियों के सवाल को लेकर हम

सभी एकजुट होना चाहते हैं और सरकार को चुनौति देना चाहते हैं, उनका क्या हुआ? अगर हम उनके प्लाइट् लेकर नहीं लड़ते हैं तो उनको फिर से आजादी की लड़ाई लड़नी पड़ेगी?

शरी محمد سلیم: ابھی شری شتروگھن پرساد سنہا جو مدعا یہاں اٹھایا ہے اور شری شنڈے جی نے بھی اسکا سمرتھن کیا ہے۔ آج سوال یہ نہیں ہے کہ کانگریس کی رائے ہے۔ جنتا دل کی رائے ہے۔ بی۔ جے۔پی کی رائے ہے یا شیو سینا کی رائے ہے۔ سوال یہ ہے کہ جو ٹرائبل بچے مارے جاتے ہیں انکو تو معلوم بھی نہیں ہوتا ہے کہ کس پارٹی کا کونسا سمبل ہوتا ہے۔ آج ہماری آزادی کے پچاس سال ہو گئے ہیں۔ ان پچاس سالوں میں اور پچاس سال پہلے یا سو سال پہلے جن لوگوں نے اس دیش کی آزادی کیلئے۔ ملک کیلئے خون بہایا تھا وہ آدیواسی لوگ ہی تھے۔ آج انکے بچوں کو کھانا بھی اپلبدھ نہیں ہے۔ جس کی وجہ سے وہ مارے جا رہے ہیں۔ انکے پاس نہ تو کوئی سادھن ہے جو پہلے انکے پاس زمین تھیں۔ جنگل وغیرہ تھے وہ انکے پاس سے چھین لئے گئے ہیں۔ آزادی کے پچاس سالوں سے وہ اپنے ادھیکار کیلئے لڑ رہے تھے۔ اس سدن مینکیول چرچا کرنے سے سمسیا حل نہیں ہوگی۔ ہماری سرکار نے کہا تھا کہ دہلی میں اتنی گاڑیاں ہیں۔ یہ گاڑیاں کہاں سے آئیں۔ جاکر سرکار سے پوچھئے تو وہ کہتی ہے کہ ہم نے اتنے پروجیکٹس سینکشن کئے۔ اتنی اسکیمیں سینکشن کیں۔وہ روپیہ یہیں کیپیٹل گاڑیوں میں تبدیل ہو جاتا ہے۔

وائس چیئرمین ''شری وی نارائنا سامی'': مسٹر سلیم ''یو آر آن لی ایسوسی ایٹنگ''۔

شری محمد سلیم: آج چاہے آدی واسی دہلی میں ہوں۔ اتراوتی میں ہوں یا مدھیہ پردیش کے بستر ضلع میں ہوں۔ انکو کھانا نہیں مل رہای ہے۔ سوال یہ ہے کہ اس سدن سے کیول اونچ کا سمرتھن ہونا چاہئے یہاں کسی پارٹی کا سوال نہیں ہے۔ آدیواسیوں کے سوال کو لیکر ہم سبھی ایک جٹ ہونا چاہتے ہیں۔ اور سرکار کو چنوتی دینا چاہتے ہیں انکا کیا ہوا۔ اگر ہم انکے پلائٹ لیکر نہیں لڑتے ہیں تو انکو پھر سے آزادی کی لڑائی لڑنی پڑے گی۔

श्री वसीम अहमद : आज हाउस में श्री शत्रुघ्न जी ने जो बात रखी है यह इंसानियत से भरी हुई बात है। आज इन्होंने बीजेपी की हैसियत से नहीं बल्कि इंसानियत की हैसियत से इस हाउस के सामने बात रखी है। आज पूरा हाउस इनके साथ खड़ा है। यही वजह है कि आज अगर हम सब इंसानियत के लिए लड़े और जुल्म चाहे किसी पर भी हो, चाहे वह दलित पर हो, माइनोरिटी पर हो या बैकवर्ड पर हों, अगर हम सब खड़े होंगे तो हम इस मुल्क को मजबूत मुल्क बनायेंगे। मैं शत्रुघ्न जी को मुबारकबाद देता हूं कि आज उन्होंने हिम्मत करके पूरे हाउस की मदद ली है और सब लोग आज उनके साथ

†[ ]Transliteration in Arabic Script

खड़े हुए हैं। मैं यह चाहता हूं कि कम से कम बीजेपी को यह चाहिये कि वह शत्रुघ्न जी की राय कभी-कभी मान लिया करे और उनका मशविरा ले लिया करें।

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी : बीजेपी को राय की जरूरत नहीं है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Chaturvedi, please sit down. I have called Shrimati Jayanthi Natarajan. This is not a party issue. Shrimati Jayanthi Natarajan, please.

RE. USE OF TEENAGERS BY INDIAN TOBACCO COMPANY FOR ADVERTISEMENT CAMPAIGH

SHRIAMTJ, JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): Mr. Vice-Chairman, Sir, I would like to draw the attention of the House and of the Govemment to another very important issue relating to the use of, objectionable use of teenagers, young children, for advertisement purposes by cigarette companies.

The Indian Tobacco Company, the tobacco giant in the country, started this campaign in Chennai in the first week of February. In the month before that, for one month, they hired children, teenagers, less than eighteen years of age, to go round discotheque hotels, schools and colleges, of Chennai, handing out invitations to children. Not one invitation was given to anybody over eighteen years of age. The invitations were handed out for a party. The children were invited to this party. All the children who came to this party were between sixteen and twenty-one years of age. Thousands of children were called to this party. The party was held in the first week of February in Channai, in the Film City premises. Free liquor was given to them.

SOME HON. MEMBERS: Shame.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Free alcohol was given to the children. Free cigarette packets were handed out to these children. This was a campaign for a new cigarette called 'Ultra. They are targeting children with Ultra. We do know the marekting strategy. All smokers can never be persuaded to change to new brands. Therefore, this company has now taken to target the youngest, the tendermost, the most vulnerable section of the society, children, to become smokers of this brand in this horrible way, This party was held. Huge hoardings were put up in the premises for the party, consisting of advertisements for the Ultra cigarette. As soon as the children went there, they were asked to complete a jigsaw puzzle about the Ultra cigarette. As soon as they completed the jigsaw puzzle, they were given caps with the logo of the Ultra cigarette and the ITC. Then, they were given beer. Then they had dances. They nad disc jockeys. They bad dark lights and music. After that, in front of a hoarding Which was put up over there, photographs were taken of these children. The photographs were put in plastic covers. These, of Course, will also be used for advertising purposes. Their parents were not invited. Adults were not invited. The adults of my city came to know of this to their horror later, the day after the party. All these children went home with free cigarettes. Besides that, they have gone about hiring children of 17, 18 or 19 years of age to distribute the cigarettes free in schools and colleges in the city.

Sir, this is the most shameful abuse of any kind of advertisement power in this country. We all know that even for adults smoking is something which is so bad for health that the Government has taken strict action to prevent smoking on aircraft. Targeting young, vulnerable children in this way without the knowledge of their parents, is outrageous, shameful and uncivilised, and it should not be countenanced in this House. I demand that the Government should take immediate action against this company. It should also take steps to see that a ban is imposed by law on depicting